11

यीशु की कलीसिया: मिशन

यीशु की कलीसिया के अन्य विशेष चिह्नों का उल्लेख किया जा सकता था,[1] परन्तु मैं केवल एक और बात पर चर्चा करूंगा। फिर मैं, अध्ययन के इस भाग को समाप्त कर दूंगा।

कलीसिया के लिए चुनौती

कलीसिया ईश्वरीय संस्थान है, जिसका उद्देश्य ईश्वरीय है। यीशु ने अपने उद्देश्य को एक बार इन शब्दों में परिभाषित किया था: ''क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को ढूंढ़ने और उनका उद्धार करने आया है'' (लूका 19:10)। उसकी कलीसिया का भी यही उद्देश्य है। बहुत से उद्देश्य हैं परन्तु महत्वपूर्ण केवल एक ही है: और वह है स्वर्ग में जाना। ''यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे, और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा?'' (मत्ती 16:26क)।

''खोए हुओं को ढूंढना'' कलीसिया के लिए एक चुनौती है और इस चुनौती को कम से कम तीन ज़िम्मेदारियों में बांटा जा सकता है:

(1) *सुसमाचार प्रचार*: ''सुसमाचार प्रचार'' शब्द का अर्थ है ''[यीशु का] शुभ समाचार बताना।'' सुसमाचार प्रचार करने का आदेश यीशु के ग्रेट कमीशन में दिया गया था:

> इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ: और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं (मत्ती 28:19, 20)।
>
> ... तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा, वह दोषी ठहराया जाएगा (मरकुस 16:15, 16)।

हर मसीही को चाहिए कि वह जिससे भी मिले, उसे यीशु और उसके मार्ग की शिक्षा दे।

(2) *सुधार* : यहां ''सुधार'' शब्द का अर्थ है ''उन्नति करना।'' मसीही लोग शिक्षा और उत्साह देकर एक दूसरे की उन्नति करते हैं। इफिसियों 4:15, 16 वह जगह है जहां यह चुनौती दी गई है:

> बरन प्रेम में सच्चाई से चलते हुए, सब बातों में उसमें जो सिर है, अर्थात मसीह में बढ़ते जाएं, जिससे सारी देह हर जोड़ की सहायता से एक साथ मिलकर, और एक साथ गठकर उस प्रभाव के अनुसार जो प्रत्येक भाग के परिमाण से उस में होता है, अपने आप को बढ़ाती है, कि वह प्रेम में उन्नति करती [अर्थात, सुधरती] जाए।

(3) *परोपकार* : ''परोपकार'' शब्द से भाव दूसरों की सहायता करना है क्योंकि हम ''उनका भला चाहते हैं।'' परोपकार में आम तौर पर दूसरे ज़रूरतमंद लोगों की आवश्यकताओं को पूरा करना आता है, जिनमें शारीरिक आवश्यकताएं जैसे कि भोजन और कपड़ा आदि होती हैं। नये नियम की बहुत सी आयतें दूसरों की सहायता की ज़िम्मेदारी के सम्बन्ध में बताती हैं।

> हमारे परमेश्वर और पिता के निकट शुद्ध और निर्मल भक्ति यह है, कि अनाथों और विधवाओं के क्लेश में उनकी सुधि लें, और अपने आप को संसार से निष्कलंक रखें (याकूब 1:27)।

> इसलिए जहां तक अवसर मिले हम सब के साथ भलाई करें; विशेष करके विश्वासी भाइयों के साथ (गलतियों 6:10)।

किसी भी कलीसिया के लिए बहुत से कार्यों में उलझ जाना और परमेश्वर द्वारा दिए गए उद्देश्य को भूल जाना बहुत आसान बात है।

आपके लिए एक चुनौती

अपने अध्ययन को प्रभावशाली बनाने के लिए इसे वैयक्तिक और व्यावहारिक बनाना आवश्यक है। मैं चाहता हूं कि आप यीशु की कलीसिया पर छह पाठों (इसे मिलाकर) पर पुनर्विचार करें। फिर मैं चाहूंगा कि आप कुछ धार्मिक संगठनों की तुलना प्रभु की कलीसिया से करें, जिसके बारे में नया नियम सिखाता है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि इस अभ्यास के लिए आप किस धार्मिक संगठन को चुनते हैं। (यह वह भी हो सकता है जिसे आप पसन्द करते हैं या वह भी हो सकता है जिसे आप पसन्द नहीं करते।) यह अध्ययन आपको सूक्ष्म भेद करने में प्रोत्साहित करने के लिए है। तुलना करने में अपनी सहायता के लिए, पहले प्रश्नों की एक सूची बना लें।

आपको निम्न प्रकार के साधारण प्रश्न पूछने चाहिए :

- क्या यह कलीसिया परमेश्वर का भय मानने वाली है जो परमेश्वर में, यीशु में और बाइबल में विश्वास रखती है?
- क्या यह परमेश्वर को प्रसन्न और लोगों को दृढ़ करने के लिए वचनबद्ध है?

आपको अपने अध्ययन से सम्बन्धित विशेष प्रश्न भी पूछने चाहिए:

- क्या इस कलीसिया का पदनाम वचन के अनुसार है?
- क्या इस कलीसिया का संगठन वचन के अनुसार है?
- क्या इसके प्रचारकों को ''पास्टर'' कहा जाता है? क्या वे अपने नाम के साथ वचन के बाहर से पदवी लगाते हैं जैसे कि ''रैवरेण्ड''?
- क्या यह कलीसिया वचन के अनुसार आराधना करती है? क्या यह हर सप्ताह के पहले दिन प्रभु-भोज लेती है? क्या यह आराधना में केवल मौखिक संगीत का उपयोग करती है?

प्रश्नों की सूची बनाते समय उन बातों की उपेक्षा मत करें, जिनका कलीसिया से गहरा सम्बन्ध है। यीशु ने कहा था :

> ... तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख। बड़ी और मुख्य आज्ञा तो यही है। और उसी के समान यह दूसरी भी है, कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख (मत्ती 22:37-39)।

आपको काम के साथ-साथ आराधना भी करनी होगी जिससे आप इस प्रकार की आज्ञाओं को मानने के लिए उत्साहित हों।

इस अभ्यास के अन्तिम भाग के रूप में, अपनी सूची की तुलना मसीह की एक स्थानीय कलीसिया से करें। मसीह की कलीसियाएं पहली सदी की मसीह की कलीसिया को बहाल करने का दावा करती हैं। मसीह की कलीसियाएं ''जहां बाइबल बोलती है वहां बोलने'' और ''जहां बाइबल चुप है वहां चुप रहने'' का दावा करती हैं। उनके दावों को चुनौती दीजिए (प्रेरितों 17:11)।

सारांश

यीशु की कलीसिया परमेश्वर की ''सनातन मनसा'' का भाग थी (इफिसियों 3:10, 11)। ''कलीसिया के द्वारा, परमेश्वर का नाना प्रकार का ज्ञान ... प्रकट किया'' जाता है (इफिसियों 3:10)। परमेश्वर की महिमा कलीसिया में चमकती है (इफिसियों 3:21)। कलीसिया ''सत्य का खम्भा, और नेव है'' (1 तीमुथियुस 3:15)। मुझे आशा है कि कलीसिया के हमारे इस अध्ययन को आप सराहेंगे। यह परमेश्वर का अद्‌भुत और शानदार प्रबन्ध है।

आज प्रभु की कलीसिया को पहचानना और उसका सदस्य बनना आवश्यक है। क्या कलीसियाओं की बहुतायत उलझाने वाली है ? हां। क्या इस उलझन में यीशु की कलीसिया को ढूंढ़ना आसान है ? नहीं। फिर भी, परमेश्वर की सहायता से, आप इसे ढूंढ़ सकते हैं। पौलुस की तरह सकारात्मक रुख रखिए, जिसने कहा, ''जो मुझे सामर्थ देता है उसमें मैं सब कुछ कर सकता हूं'' (फिलिप्पियों 4:13)।

पाद टिप्पणियां

[1]प्रभु की कलीसिया की पहचान के लिए यह भी पूछा जा सकता है कि इसकी स्थापना कब और कहां हुई (प्रेरितों 2) और यह कलीसिया की एकता पर कितना ज़ोर देती है (यूहन्ना 17:20, 21; 1 कुरिन्थियों 1:10-13; इफिसियों 4:4-6)।